



शोधायन

(मानविकी, समाज विज्ञान, वाणिज्य की अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भित शोध पत्रिका)

वर्ष : 6

अंक : 26

जुलाई - दिसम्बर 2018 (अर्द्धवार्षिकांक)

GREGN. No. 10986/2012-CO/C
ISSN 2249 - 7536 Shodhayan
MPHIN 32060/2015
Refrd. & UGC apprvd. Jnl. No. 64453

International Overview

Vol. 26, Year - 6, July to December 2018



Shodhayan

(An International Quarterly Multidisciplinary UGC approved Research Journal)

GREGG. No. 16986/2012-CGIL
ISSN 2249 - 7536 Shodhayan
MPHIN 32060/2015
UGC Approved Jmt. No. 64453

शोधायन

मानविकी, समाज विज्ञान, वाणिज्य की
अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक अन्तर्भूत शोध पत्रिका
क्रियेडिटिव सर्विसेज अनुदान आयोग से अधिसूचित शोध पत्रिका

66
प्रयास

(शिक्षा, साहित्य, कला एवं संगीत पीठ, खालियर)
पत्र. क्र. : 02/42/01/14126/10, दि. 15-11-2010

पंजीकृत कार्यालय -

एन. आई. जी. 1305, न्यू दर्पण कॉलोनी
वर्दीपुर, मुंगेर, खालियर - 474011

संपादकीय कार्यालय पत्र व्यवहार का पता -

मार्केट निवास, बस्ती की पीठ

जनकपुर, लखनऊ, खालियर-474001

प्रमाणपत्र - 9826409252, 9755447899, 9406984416

टेलीफोन - 0751-2629694

Email : shodhayan01@gmail.com

प्रकाशन मास जनवरी 2019

वर्ष : 6 अंक 26 जुलाई से दिसम्बर 2018 (अर्द्धवार्षिक)

वार्षिक सदस्यता : 1000/- सहयोग राशि

छः वार्षिक सदस्यता : 2000/- सहयोग राशि

आजीवन सदस्यता : 3000/- सहयोग राशि

डॉ. रामकृष्ण गुप्त के लिए प्रयास - शिक्षा, साहित्य, कला एवं संगीत पीठ,
खालियर द्वारा प्रकाशित एवं प्रोफेसर क्रियेडिटिव सर्विसेज, खालियर से सुदित।

(नोट-पत्रिका में प्रकाशित आलेख लेखकों/सोचार्थियों के हैं,
यह आवश्यक नहीं कि संपादक पीठ इसके सहमत हों।)

सलाहकार संपादक

डॉ. रामकृष्ण गुप्त

प्रधान संपादक

डॉ. प्रीतेश मोहिते

उप-संपादक

डॉ. कृष्ण गुप्ता

डॉ. विजय पाण्डेय

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

सहयोगी संपादक

डॉ. पी.के. बंसल

डॉ. अर्पिता सिंह तोषर

डॉ. आदित्य डालमिया

धृति कार्यालय प्रबन्ध एवं सम्पर्क

संदीप गुप्ता

सचिव, प्रयास -

शिक्षा साहित्य कला एवं संगीत पीठ

श्रीमती अलका छारी

सदस्य

आलोक शर्मा

सदस्य

मुद्रक

इम्प्रेस्ट क्रियेडिटिव सर्विसेज

खालियर फोन : 0751-2424427

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय विवरण	लेखक	पृष्ठ संख्या
हिन्दी साहित्य -			
1.	माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य संवेदना और शिल्प	डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय	01 - 04
2.	संत कवि रैदास के काव्य में चित्रित सामाजिक मूल्यों की प्रासंगिकता	डॉ. शिव कुमार शर्मा	05 - 09
3.	अवधी और भोजपुरी के लोक साहित्य में एकात्मता	अनुज कुमार शुक्ल	10 - 18
4.	यशपाल के उपन्यासेत्तर साहित्य में आम-आदमी	ज्योति दातीर	19 - 21
5.	कबीर वाणी का व्यक्तित्व विकास में योगदान	ज्योति राजौरिया डॉ. पी.के. बंसल	22 - 24
6.	वर्तमान हिंदी कहानी की विशेषताएँ	डॉ. रेखा भटनागर	25 - 27
कला व संगीत -			
7.	जयपुर घराना एवं उस्ताद अल्लादिया खाँ की गायकी	डॉ. साधना देशमुख मोहिते	28 - 33
8.	संत काव्य में संगीत का महत्त्व	अंकित मिश्रा	34 - 36
9.	भारतीय संगीत की गायन विधा : ठुमरी गायकी	श्रीमती स्वप्ना मराठे	37 - 39
10.	बौद्ध कला का प्रमुख प्रतीक "कमल"	सीमा कुमारी डॉ. एस.के. द्विवेदी	40 - 47
समाज शास्त्र -			
11.	वर्तमान समय में युवाओं में मोबाईल के कारण समाजीकरण पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. राकेश करहेरिया	48 - 50
12.	भारतीय संविधान के परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण	डॉ. सुशीला माहौर कु. सरिता बडोले	51 - 53
13.	महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (ग्वालियर नगर की शिक्षित महिलाओं के विशेष संदर्भ में)	डॉ. सुशीला माहौर सपना बडोले	54 - 59
इतिहास व पुरातत्व -			
14.	महात्मा गाँधी के राजनीतिक मार्गदर्शक - गोपाल कृष्ण गोखले	डॉ. राजेश मोहिते	60 - 62
15.	सोनभद्र : संस्कृति, साहित्य, एवं विकास	शादाब फराह डॉ. ऊषा भसीन डॉ. मुजफ्फर अहमद खाण्डे	63 - 67

माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य संवेदना और शिल्प

*डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

माखनलाल चतुर्वेदी छायावाद के राष्ट्रीय धारा के कवि हैं। वे रसवादी कवि एवं चिंतक हैं। उन पर बचपन से वैष्णव भाव प्रबल रहा। यह वैष्णव प्रभाव भक्त के व्यक्तिगत जीवन से जगत तक आचार-विचार की शुद्धता को व्यापक बनाता है। अतः चतुर्वेदी जी पर जीवन भर इस सात्विकता का प्रभाव बना रहा। 'प्रभा' नामक पत्रिका में अनेक नामों से लिखते थे, जैसे-श्री गोपाल, भारत संतान, कुछ नहीं, भारतीय, सुधारप्रिय, पशुपति, नीतिप्रेमी, एक विद्यार्थी, एक भारतीय प्रजा, एक नवयुवक, तरुण भारत, एक भारतवासी आदि। अंत में एक भारतीय आत्मा उपनाम उन्हें भाया और वे इसी नाम से कविताएँ प्रकाशित करवाने लगे। उपरोक्त सभी नामों में सात्विक राष्ट्र प्रेम झलकता है। यही राष्ट्र प्रेम उनके काव्य का मूलस्वर बना। वे वैष्णव धर्म की एकनिष्ठता से प्रभावित थे। उनका प्रिय पद था -

निरंजन बावरी वे अंखिया जरि जायं

जो सांवरी छांड़ि निहारत गोरी ।

माखनलाल की रुचि भक्ति काव्य में थी। वे अत्यंत संवेदनशील थे। जीवन भर एकाकी रहने के कारण घर के लिये हूक उनकी कई काव्य पंक्तियों में दिखायी देती है। जैसे- 'तुम न हुए घर मेरे इस उजड़ती हाट में घर माँगता हूँ।' 'मत घर की याद दिलाओ तुम।' पृथ्वी को माता और आकाश को ही घर की छत मानने वाले कवि की

शिक्षा क्रांतिकारियों के संग- साथ से पूर्ण हुई थी। अतः क्रांति के स्वर उनकी कविता में दिखाई देते हैं- 'विद्रोही' - 'हम नहीं हैं रूढ़ि की / पुस्तक के पथरीले भार कबीर का अक्खड़-फक्कड़पन उन्हें पसंद था। सोलह वर्ष की आयु में कबीर के पद को आदर्श मानकर उन्होंने यह रचना लिखी- "जब लियो फकीरी बाना / माँग क्यों टुकड़े खाना हराम के।"

माखनलाल चतुर्वेदी समाज सुधार एवं राजनैतिक आंदोलनों में भाग लेते हैं। राष्ट्रीयता से ओतप्रोत, ओजस्वी साहित्य की रचना के पीछे उनका देश प्रेम था। राष्ट्रीय झंडे की भेंट कविता में चतुर्वेदी जी के संवेदनशील भाव बोध का पता चलता है- 'माँ, रोवे मत शीघ्र लौट / घर आऊँगा, प्रस्थान करूँ / बाबा दो आशीष, पताका / पर सब कुछ कुरबान करूँ / मातृभूमि तेरे ध्वज की / मेरे प्राणों से शान रहे।' डॉ. रामविलास शर्मा ने कहा माखनलाल चतुर्वेदी अमरवाणी का कवि है। वे लिखते हैं- "माखनलाल जी की रचनाओं में उदात्त राष्ट्रीय भावना है, साथ ही छायावादी काव्य की भाव सुषमा भी। वास्तव में राष्ट्रीय भाव राष्ट्रीय भाव धारा और छायावाद को अलग करना असंगत है। एक राष्ट्रीय भाव धारा वह है, जिसके प्रतिनिधि मैथिलीशरण गुप्त हैं। कुछ लोग इसे हिंदी की एकमात्र राष्ट्रीय काव्य धारा मानते हैं। इस धारा का ऐतिहासिक महत्व है जन जागरण

*प्राध्यापक हिन्दी, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)